बाब पैगंमरों का

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम।
पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम।। १ ।।

संसार में परमात्मा का पैगाम देने वाले जितने भी पैगम्बर, ज्ञानी हुए हैं, उनको जबराईल फरिश्ते से ही पैगम्बरी मिली है। यह अक्षरधाम की सीमा तक जाता है।

हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर।
आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर।। २ ।।

कुरान की हकीकत के ज्ञान से अक्षरधाम तक पहुंचा जा सकता है। आगे श्री राजजी महाराज के दिल के बातें कुलजम सरूप की मारफत सागर की वाणी में हैं।

हुआ मेयराज महंमद पर, तिनमें बका सब बात।
महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात।। ३ ।।

मुहम्मद साहब को मेयराज (दर्शन) हुआ। मेयराजनामा में वह सभी अखण्ड की बातें लिखी हैं। रसूल साहब श्री राजजी महाराज के सामने मूल-मिलावा में पहुंचे और वहां उन्होंने मोमिनों को बैठा देखा।

देखे मोती पूर नूर से, कह्या मुंह पर कुलफ तिन।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन।। ४ ।।

उन्होंने मोमिनों के इश्क भरे मुंह पर ताला लगा देखा। श्री राजजी महाराज ने कहा, हे मुहम्मद! तेरे दिल में, जब मैं वाणी, अर्थात् कुलजम सरूप दूंगा तब इनके मुंह के ताले खुलेंगे।

गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन।
देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन।। ५ ।।

हे मुहम्मद! तेरी जमात ने गुनाह कर लिया है और इसलिए इन मोमिनों के मुंह बन्द हैं। तुम अपने दाहिने हाथ पर श्री श्यामाजी महारानी को देखो। इनके मुंह पर भी ताला लगा है। यह वचन भी श्री राजजी महाराज ने अपने मुख से कहे।

किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर।
कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा, हे मुहम्मद! तू चिन्ता किस बात की करता है? अपने दाहिने हाथ पर श्री श्यामाजी को देखो। मोती (मोमिनों) को देखो जिनके मुंह पर ताला लगा है। तब सब बातें मुहम्मद साहब को समझ में आ गईं।

हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल।
ए जो दई फरामोसी खेलमें, जो उतरते मांग्या रूहों मिल।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम्हारी जमात ने गुनाह किया है, इसलिए इनके दिलों पर ताला लगा है। तुम्हारी इन रूहों ने मिलकर खेल मांग लिया है, इसलिए इनको फरामोशी दी है।

Nijanand App

कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत।
जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत।। ८ ।।

रसूल साहब ने पहले वहां सुन्दर वनों को देखा। फिर जवेर से जड़े जगमगाते हुए महलों को देखा। जमुनाजी के किनारे कई वृक्षों की सुन्दर सुगन्धि का आनन्द लिया।

देख्या हौज अर्स का, द्योहरियां गिरदवाए।
और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए।। ९ ।।

उन्होंने परमधाम के हौज कौसर को देखा और घेरकर आई द्योहरियों को देखा और मोतियों के समान चमकते हुए वनों को भी देखा।

इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान।
कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान।। १० ।।

यहां तक जबराईल फरिश्ता मुहम्मद के साथ रहा। फिर उसने कहा कि वह चौथे आसमान परमधाम में नहीं जा सकता।

महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम।
और कही हकीकत, आखिर आवने ईसा इमाम।। ११ ।।

इन वचनों ने मुहम्मद की साहेबी बतलाई है। आखिर के वक्त में इन्हीं वचनों ने रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के आने की भविष्यवाणी की है।

पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार।
दई कुंजी बका की, देखे लैलत कदर तीन तकरार।। १२ ।।

इस मृत्युलोक में श्री श्यामाजी महारानी को श्री श्यामजी के मन्दिर में दर्शन हुआ। वहां श्री राजजी महाराज ने उन्हें तारतम ज्ञान की कुंजी दी। जिससे उन्हें बृज, रास और जागनी (लैल तुल कदर के तीन हिस्से) का ज्ञान हुआ।

हक बैठे आए अंदर, पट अर्स दिए सब खोल।
जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज श्री श्यामा महारानी के तन में आकर बैठे और परमधाम के सारे दरवाजे खोल दिए। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की जो वाणी कही है, वह सब श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी को समझाई थी।

जो हुकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार।
और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से रसूल साहब ने शरीयत के तीस हजार हरफ जाहिर किए। दूसरे तीस हजार जाहिर करने का उनको अधिकार दिया और तीसरे तीस हजार जो गुझ (गुह्य) रखे थे, वह श्री राजजी महाराज ने श्यामाजी को बड़े प्यार से श्री श्यामजी के मन्दिर में समझाए।

अब कहूं रूहअल्लाह की, जिन दई महंमद साहेदी।
मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की।। १५ ।।

अब श्री श्यामाजी महारानी की बात बताती हूं, जिन्होंने रसूल साहब की बात की गवाही दी। मेरे दिल को उनसे ज्ञान प्राप्त हुआ। अक्षरधाम, परमधाम दोनों की जानकारी पाई।

Nijanand App

जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए।
सो ए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाह।। १६ ।।

जहां जबराईल नहीं जा सका, वह सभी ठिकाने श्री श्यामाजी महारानी की कृपा से देखे।

हौज जोए आई नजरों, और नूरजलाली हद।
इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद।। १७ ।।

हौज कौसर, जमुनाजी और अक्षरधाम की सीमा की जानकारी श्री श्यामाजी महारानी के ज्ञान से और मुहम्मद साहब के कुरान और हदीसों से मिली।

और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत।
ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत।। १८ ।।

मूल-मिलावा के अन्दर जो बातें हुईं, वह सब इशारतों में कही हैं। इनकी गवाही श्री श्यामाजी और मोमिनों के बिना दूसरा और कौन खोल सकता है?

देखी सूरत अमरद, तासों किया मजकूर।
सो ए दुनीमें महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर।। १९ ।।

मुहम्मद साहब ने श्री राजजी महाराज के किशोर स्वरूप को देखा और बातें कीं। यह सब बातें दुनियां में आकर मेयराजनामे में जाहिर की हैं।

दुनियां चौदे तबकमें, जाकी तरफ न पाई किन।
सो सब मेयराजमें, रसूलें करी रोसन।। २० ।।

चौदह तबक की दुनियां में परमधाम की खबर किसी को नहीं थी। यह सब बातें रसूल साहब ने मेयराजनामे में जाहिर की हैं।

पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल।
और क्यों समझें ए माएने, जो इन राहमें जात हैं जल।। २१ ।।

इस वाणी को वही समझ सकता है जो इस मंजिल तक पहुंचा हो। दुनियां वाले इस बात को कैसे समझेंगे जो इस रास्ते में ही समाप्त हो जाते हैं।

इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत।
ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखिरत।। २२ ।।

मूल-मिलावा के अन्दर श्री श्यामाजी पहुंचीं। वह भी मुहम्मद की मलकी सूरत हैं। श्री राजजी महाराज ने इनको बड़ी रूह कहा है। अब आखिरी जमाने के खाविन्द की शोभा इन्हीं को दी है।

महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेंहेंदी इमाम।
मार दज्जाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम।। २३ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि ईसा रूह अल्लाह आएंगे और इमाम मेंहेंदी आएंगे। वह संसार का कुफ्र मिटाकर एक दीन कायम करेंगे।

Nijanand App

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवें सब दिल।
ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल।। २४ ।।

एक दीन तभी होगा जब सबके दिल के संशय मिट जाएंगे। यह बड़ा काम श्री प्राणनाथजी के बिना सम्भव नहीं है, चाहे चौदह लोक मिलकर भी क्यों न आएं?

सो ए खिताब रूहअल्लाका, या महंमद सिर खिताब।
या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब।। २५ ।।

एक ही दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में सबको लाने का काम श्री श्यामाजी महारानी या हुकम के स्वरूप मुहम्मद साहब या इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज सब ग्रन्थों के रहस्यों को खोलकर करेंगे।

सोई खोले ए माएने. जिन लई मजल इन ठौर।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और।। २६ ।।

जो परमधाम तक पहुंच गया है, वही इन ग्रन्थों के छिपे रहस्यों को खोल सकता है। यह मूल-मिलावा परमधाम का ज्ञान है। इसे दूसरा कह नहीं सकता, जल मरेगा।

ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी ऐसा दुस्मन।
पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन।। २७ ।।

यह जो आदम की औलाद आदमी हैं, उनके दिल झूठे हैं। जिन पर शैतान अबलीस की बादशाही है। यह सब निराकार के पूजक हैं, इसीलिए यह कुरान की वाणी कैसे सुन सकेंगे?

हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब।
झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और कुलजम सरूप की वाणी की जब पहचान हो जाएगी, तब सच्चे मोमिन और झूठे दुनियां वाले जो दोनों एक साथ रह रहे हैं, एक पल में अलग-अलग हो जाएंगे।

ए सब पैदा महंमदके नूरसे, अव्वल आखिर सोई नूर।
एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर।। २९ ।।

यह सारी सृष्टि मुहम्मद के नूर से पैदा हुई है। अव्वल से भी रसूल मुहम्मद आए। बीच में मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए। आखिर में हकी सूरत मुहम्मद श्री प्राणनाथजी आए। अब सब दुनियां को मुहम्मद की तीनों सूरतों की पहचान होगी। मुहम्मद के नूर के बिना दुनियां एक पल के लिए भी नहीं रह सकती।

सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ जहूर।
झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अर्स ऊगे सूर।। ३० ।।

आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज कुरान के छिपे रहस्यों को खोलेंगे। तब झूठ दूर हो जाएंगे और अज्ञान का अंधेरा मिट जाएगा और फिर सभी कुलजम सरूप की वाणी के तेज को देखेंगे।

सब की जुबांसे महंमद, सब पर करसी हिदायत।
ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझे दम गफलत।। ३१ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज सबको सबकी बोली में समझाएंगे। यह बातें सब धर्मग्रन्थों में लिखी हैं, पर दुनियां के झूठे जीव नहीं समझते।

Nijanand App

अव्वल आखिर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम।
हकें मासूक कह्या महंमद को, सो क्यों समझे दुनी आम।। ३२ ।।

शुरू में, बीच में और आखिर में मुहम्मद की बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतें हैं। इन वचनों को सब दुनियां समझती है, परन्तु श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी को माशूक क्यों कहा, इसकी समझ दुनियां वालों को नहीं है।

जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम।
सो बात समझे हक अर्सकी, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम।। ३३ ।।

जितने भी रूह मोमिन हैं और जिन्हें कुलजम सरूप की वाणी मिल गई है, वह ही श्री राजजी महाराज और परमधाम की बातों को समझते हैं, क्योंकि इनके दिलों में बिना कलम के लिखा है।

और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े।
सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे।। ३४ ।।

और जाहिरी दुनियां वाले जो झूठे दिल के हैं, उनके दिल को नाचीज मुर्दा, गोश्त का टुकड़ा कहा है। वह क्या सुनेंगे और क्या कहेंगे? यह अन्धे हैं, बहरे हैं और मुर्दे हैं।

दिल मोमिन अर्स कह्या, उतरे भी अर्स से।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में।। ३५ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। वह उतरे भी परमधाम से हैं। इनके दिलों में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए इनकी सिफत यहां की जबान से नहीं कही जा सकती।

कह्या दुनी निकाह अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास।
जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास।। ३६ ।।

कुरान में लिखा है कि दुनियां की शादी शैतान (नाबूद अबलीस) से हुई है। इसलिए झूठे दिल वाले इस शैतान की औलाद हैं जो आदम (आदि नारायण) की औलाद हैं, वह सब निराकार के पूजक हैं।

कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमिन।
हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन।। ३७ ।।

श्री श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं और मोमिन श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं, इसलिए श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें एकतन हैं। इनकी महिमा के लिए कोई शब्द ही नहीं है।

कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर।
नाजी को हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर।। ३८ ।।

मुहम्मद साहब के तिहत्तर फिरके कहे हैं, जिनमें एक मर्द मोमिनों का नाजी फिरका और बहत्तर नारी (दोजखी) कहे हैं। नाजी फिरके को श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप की वाणी मिल गई है और वह दीन के सच्चे रास्ते पर चलते हैं।

और तफरका भए, चले कौल तोड़ कर।
दाएं बाएं चलाए दुस्मनें, मारे गए हक बिगर।। ३९ ।।

रसूल साहब के वचनों को तोड़कर और सब बहत्तर फिरकों में अलग-अलग हो गए। उनके पास सच्चा खुदाई ज्ञान कुलजम सरूप न होने से शैतान अबलीस ने इन्हें कर्मकाण्डों में बांध दिया।

Nijanand App

मेयराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन।
सो आखिर ईसा इमामें, किए मेयराज में सब मोमिन।।४०।।

श्री राजजी महाराज का दर्शन केवल रसूल साहब को हुआ। और कोई दूसरा उनके पास नहीं जा सका। अन्त समय ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने सब मोमिनों को श्री राजजी की पहचान करा दी।

खूबियां आखिर बखत की, किन मुख कही न जाए।
खूबी कहिए तिन की, जो सब्द माहें समाए।।४१।।

यह आखिर के समय की खूबियों के सुख हैं, जिनका वर्णन इस जबान से कैसे करें? वर्णन तो उनका ही हो सकता है जो शब्द में आ सकें।

अव्वल जमाने के सैयद, और बड़े केहेलाए पैगंमर।
पर सो बराबरी कर ना सके, जो आई उमत महंमद की आखिर।।४२।।

पहले के जमाने के सब बड़े-बड़े ज्ञानी और पैगम्बर कहलाने वाले मुहम्मद साहब की उम्मत मोमिन जो आखिर में आए, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सका।

लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सब्द।
क्या समझें अव्वल कतार जो, दुनी बांधी जाए माहें हद।।४३।।

कुरान में सभी बातें इशारों में लिखी हैं। यह निराकार की पूजक दुनियां जो एक-दूसरे की नकल करके चल रही है, इन रहस्यों को कैसे समझ सकती है?

रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले।
आखिर अपने हुकम उठावहीं, मोमिन महंमद के।।४४।।

कुरान में लिखा है कि श्री श्यामा महारानी श्री राजजी के हुकम से मुर्दों को जिन्दा करेंगे और आखिर के समय में हकी स्वरूप इमाम मेंहेंदी साहब अपने हुकम से मोमिनों को जागृत करेंगे।

इन बिध लिख्या जाहेर, तो भी देखे न खुलासा।
सब बोले फना में रात को, किया उमतें फजर बका।।४५।।

कुरान में इस तरह से स्पष्ट लिखा है, फिर भी दुनियां वाले इस बात को नहीं देखते। सब इस झूठी दुनियां में ही अज्ञानता से घटा लेते हैं। अब मोमिनों ने कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां की अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर सवेरा कर दिया।

जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखिर।
सो गिरो नाजी महंमद की, लिखे नामे याके फैलों पर।।४६।।

धर्मग्रन्थों में जो साहेबी बताई, वह सब आखिर में आने वाले मोमिनों के लिए ही है। यह मुहम्मद का नाजी फिरका है और इनकी रहनी के कारण ही सब उपाधियां मोमिनों के लिए लिखी हैं।

अव्वल आखिर कयामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का।
खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या।।४७।।

अव्वल से रसूल साहब से लेकर आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के स्वरूप तक, कयामत होने के वक्त तक, नबी के द्वारा शुरू किया गया ज्ञान बढ़ता ही गया। कुरान और हदीसों में लिखा है कि मुहम्मद के ज्ञान बिना कोई समय खाली नहीं रहा।

Nijanand App

ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कह्या जिनका दिल अर्स।
आखिर सोई नजीकी मोमिन, जो अर्स मता के वारस।।४८।।

यह मोमिनों की जाहिर उपमा है, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है। अन्त समय के मोमिन ही श्री राजजी महाराज के नजदीक होंगे, क्योंकि परमधाम की सारी न्यामतों के वारिस यही हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हक सों जिन।
कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन।।४९।।

यह मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं। श्री राजजी महाराज ने इनसे वायदा किया था कि मैं तुम्हारे पास रसूल को भेजूंगा जो तुम्हें जागृत करेंगे।

और भेजोंगा फुरमान, सब इतकी हकीकत।
और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत।।५०।।

मैं कुरान में सब यहां की हकीकत लिखकर भेजूंगा। इन इशारतों और गुझ भेदों की सारी बातें मेरी श्यामा महारानी इमाम मेंहेंदी के तन से कुलजम सरूप के द्वारा तुम्हें बताएंगी।

दुनियां पैदा कलमें कुंन से, असल उनों जुलमत।
जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझसे निसबत।।५१।।

यह दुनियां जो कुंन शब्द कहने से पैदा हुई है, उसकी उत्पत्ति निराकार से है। इसलिए, हे मोमिनो! तुम इनसे मत मिलो। तुम्हारा सम्बन्ध श्री श्यामाजी और मुझसे है, ऐसा श्री राजजी कहते हैं।

तुम आपमें रहियो साहेद, और गवाही फरिस्ते।
मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए।।५२।।

तुम आपस में गवाह रहना और असराफील फरिश्ते को भी गवाह बनाया है। मैं भी तुम्हारी गवाही दूंगा। इन वचनों को तुम मत भूलना।

याद कीजो मेरे अर्स को, और निसबत हक हादी।
इलम देऊं मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की।।५३।।

तुम मेरे परमधाम को याद करना और इस सम्बन्ध को याद करना कि हम श्री राजजी श्री श्यामाजी के अंग हैं। मैं तुम्हारे पास कुलजम सरूप की वाणी भेजूंगा, जिससे तुम्हें जरा भी संशय नहीं रह जाएगा।

खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजी के कबूतर।
जिन मिल जाओ तिनमें, ओ तुम नहीं बराबर।।५४।।

मैंने यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। यह खेल बाजीगर के कबूतर के समान झूठा है। तुम उनसे मत मिल जाना। वह तुम्हारी बराबरी के नहीं हैं।

हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए।
तुम बका करोगे दम खेलके, पर सकोगे न आप उठाए।।५५।।

परमधाम में इसी बात की हंसी होगी कि मेरे कुलजम सरूप की वाणी से तुम जागृत हो जाओगे और संसार के जीवों को अखण्ड कर दोगे, पर स्वयं परमधाम में भी परआतम में जाग न सकोगे।

Nijanand App

ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार।
तुम जिन भूलो आप अर्स मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार।।५६।।

मैं तुम्हें ऐसा झूठा खेल दिखाऊंगा जिसमें तुम सावचेत (सतर्क) रहना। तुम अपने आपको, घर को और मुझे नहीं भूलना। मैं ही तुम्हारा खाविन्द हूं।

हम कबूं न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम।
हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़ें नहीं एक दम।।५७।।

मोमिनों ने कहा कि हम आपके चरण पकड़कर बैठेंगे और आपको कभी नहीं भूलेंगे। हम आपके ऐसे आशिक हैं कि हम आपको एक पल भी नहीं छोड़ेंगे।

तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक।।५८।।

तुम हमारे धनी हो और माशूक हो। हम तुम्हारे ऐसे आशिक हैं जिन्हें आप कुलजम सरूप निःसन्देह वाणी देंगे तो फिर आपको क्यों भूलेंगे?

ए तो बड़ी हांसी कोई खेलमें, जो ऐसी होए हमसे।
मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें।।५९।।

हमसे खेल में कोई ऐसी बड़ी भूल होने वाली है, जिससे परमधाम में बड़ी हंसी होगी। श्री राजजी महाराज हमसे वायदे कर रहे हैं, इसलिए हे सखियो! तुम आपस में गवाह रहना।

लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर।
अकल न पोहोंचे इनों की, सो भी लिख्या लिखन हारे यों कर।।६०।।

संसार के धर्मग्रंथों में इस तरह से साफ लिखा है। फिर भी यह संसार के जीव जो खेल के कबूतर के समान झूठे हैं, इस बात को नहीं समझेंगे। इन बातों में इनकी अक्ल ही नहीं पहुंचेगी। लिखने वाले ने यह भी साफ लिख दिया है।

सब्द लिखे जो बुजरकों, सो सब आखिरी उमत का।
रात सब्द सब फना के, सब्द आखिरी दिन बका।।६१।।

बड़े ज्ञानियों ने जो यह शब्द लिखे हैं यह आखिरी समय में आने वाली ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते हैं। अज्ञान के सभी शब्द झूठी दुनियां के हैं जो मिट जाने वाले हैं। कुलजम सरूप की जागृत बुद्धि की वाणी ही अखण्ड है।

सो ए बड़ाई सब उमतकी, जो कही महंमद की आखिर।
वह खावंद कहे खेलके, ए खेल के कबूतर।।६२।।

यह सब उपमा (बड़ाई) आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात सुन्दरसाथ की है। यह सुन्दरसाथ खेल के मालिक हैं और बाकी दुनियां खेल के कबूतर के समान है।

एता फरक कह्या जाहेर, तो भी करें इनकी सरभर।
वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर।।६३।।

दुनियां में और मोमिनों में इतना फर्क साफ लिखा है। फिर भी दुनियां वाले इनकी बराबरी करते हैं। दुनियां मुर्दे के समान है और मोमिन सदा अखण्ड हैं, परन्तु क्या करें? दुनियां वाले बिना अक्ल के बराबरी करते हैं।

Nijanand App

फुरमान ल्याया हक का, महंमद आया किन ऊपर।
एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखिर।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज का ज्ञान मुहम्मद साहब इनके वास्ते लाए हैं। इनकी जानकारी कयामत के वक्त तक किसी को नहीं हुई।

बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान।
बड़े उलमा आरिफ कहावहीं, पर पड़ी न काहू पेहेचान।।६५ ।।

अब ग्यारहवीं सदी बीत गई है और कुलजम सरूप की वाणी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी लाए हैं। दुनियां वाले जो बड़े, पढ़े-लिखे विद्वान कहलाते हैं उनको भी इसकी पहचान (जानकारी) नहीं हुई।

पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत।
कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत।।६६ ।।

कुरान को कौन पढ़ेगा? हकीकत का ज्ञान कौन लेगा? कुलजम सरूप की वाणी से कुरान के छिपे रहस्य कौन खोलेगा?

जोलों फुरमान खुल्या नहीं, तोलों रात है सब में।
एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादीने।।६७ ।।

जब तक कुरान के रहस्य नहीं खुले, तब तक सभी अंधेरे में भटक रहे हैं। अब कुलजम सरूप की वाणी कुरान के रहस्य खोलकर सवेरा करेगी। अब स्वयं श्री प्राणनाथजी महाराज इस वाणी को अपने हाथ में लेंगे।

कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी तफरका।
एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अर्स बका।।६८ ।।

रसूल साहब के वचनों को काफिर लोगों ने न मानकर टुकड़ों-टुकड़ों में बंट गए। रूह अल्लाह आकर इनके कुफ्र को मिटाएंगे। मतभेदों को मिटाएंगे। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जब कुलजम सरूप की वाणी जाहिर करेंगे तब सब एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में आएंगे और एक पारब्रह्म के पूजक बनेंगे।

ए अव्वल कह्या महंमद ने, आए ईसा मारसी दज्जाल।
साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल।।६९ ।।

मुहम्मद साहब ने शुरू में ही कहा था कि ईसा रूह अल्लाह आकर शैतान को मारेंगे और सबके दिल के संशय मिटाकर श्री राजजी महाराज के दर्शन कराएंगे।

इमाम इमामत उमतकी, करसी अर्स अजीम ऊपर।
ए होसी हैयाती सिजदा, तब हुई तमाम फजर।।७० ।।

आखिर में इमाम मेंहेंदी ब्रह्मसृष्टियों को श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर अखण्ड परमधाम पर सिजदा कराएंगे। जब यह सब परमधाम पर सिजदा करेंगे, तो ज्ञान का सवेरा होगा।

जो अर्ससे रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार।
कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार।।७१ ।।

परमधाम से जो रूहें उतरीं, उनमें श्यामाजी रूहअल्लाह सिरदार थीं। जिनसे श्री राजजी महाराज ने वायदा किया था कि मैं तुम्हारे वास्ते रसूल को भेजूंगा।

Nijanand App

इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान।
ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान।।७२।।

कुरान में इस तरह से साफ बताया है, लेकिन आज दिन तक किसी ने बताया नहीं। यह बात मोमिन ही बता सकते हैं जिनके ऊपर श्री राजजी महाराज ने कुरान भेजा।

खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखिर मेंहेंदी खिताब।
ए ले इलम आखिरी हकका, महंमद मेंहेंदी खोले किताब।।७३।।

रसूल साहब को आखिरी पैगम्बर का खिताब मिला। आखिरत का तमाम काम इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज करेंगे। यह कुलजम सरूप की वाणी लेकर कुरान के रहस्यों को खोलेंगे।

फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के।
रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए।।७४।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान अपने हाथ से लिखकर रसूल साहब के द्वारा श्री श्यामाजी महारानी के पास भेजा, परन्तु किसी को इसकी खबर नहीं हुई।

ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका।
एक नाजी बहत्तर नारी लिखे, पर किन पाया न खुलासा।।७५।।

रसूल साहब ने पहले ही फरमाया था कि मेरे वचनों को न मानकर जमात टुकड़ों में बंट जाएगी। एक नाजी फिरका होगा और दूसरे बहत्तर नारी फिरके, परन्तु उसकी जानकारी किसी को नहीं मिली।

कौल सोई तोड़ेंगे, जिनों होसी मजाजी दिल।
होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल।।७६।।

रसूल साहब ने कहा कि जिनके झूठे दिल होंगे, वही मेरे वचनों को तोड़कर अपनी बुजरकी के वास्ते अलग हो जाएंगे।

जाहेर लिख्या मिस्कातमें, मैं डरों पीछले इमामों से।
गुमराह करसी दुनी को, ऐसे बुजरक होसी आखिरमें।।७७।।

रसूल साहब ने मिस्कात में लिखा है कि मैं आने वाले अगुओं से डरता हूं। वह ऐसे अक्लमंद होंगे कि सारी दुनियां को सही रास्ते से भटका देंगे।

होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का।
लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या।।७८।।

इन अगुओं का तन आदमी का होगा, परन्तु दिल शैतान का होगा। यह शैतान खून की तरह उनके रग-रग में समाया होगा। यह बात हदीस में लिखी है।

तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर।
यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमिन बचाए फजर।।७९।।

उनके शरीर के चारों तरफ शैतान ने घेरा डाल रखा होगा। इस तरह से शैतान सारी दुनियां को खा गया। एक मोमिनों को ही श्री राजजी महाराज ने फजर के वक्त बचाया।

Nijanand App

भांत भांत आलम में, रसूलें करी पुकार।
बिन मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार।। ८० ।।

इस तरह से संसार में तरह-तरह से रसूल साहब ने पुकारा, परन्तु मोमिनों के सिवाय कोई समर्थ न हुआ जो उनकी बातों को सुनकर सावचेत (सावधान) होता।

जिन विध लिख्या कुरानमें, हदीसों में भी सोए।
ए अर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंदसे उतरया होए।। ८१ ।।

जिस तरह से कुरान में लिखा है, उसी तरह से हदीस में लिखा है। इसे मोमिन ही समझ सकेंगे जिनके दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है और जो परमधाम से खेल में उतरे हैं।

आखिर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेंहेंदी इमाम।
इन विध खावंदी रूहअल्लाहकी, ए तीनों एक दीन करसी तमाम।। ८२ ।।

आखिरी पैगम्बर का खिताब रसूल साहब को और आखिरी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को और श्री श्यामा महारानी की इस तरह से रूह में सिरदारी—यह तीनों मिलकर सारी दुनियां को एक दीन में लाएंगी।

ए अव्वल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल।
ना बूझे हक हादी रूहोंकी, जो चौदे तबक मथें मिल।। ८३ ।।

रसूल साहब ने यह बात पहले ही कही, पर झूठे दिल वाले कैसे समझें? यह बातें श्री राजजी श्यामाजी और रूहों की हैं। यह चौदह तबक के लोग भी मिलकर नहीं समझ सकते।

केहे केहे रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए।
पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए।। ८४ ।।

रसूल साहब ने बार-बार कहा जिससे सभी बातें समझ में आ जाएं, पर इन बातों को श्री राजजी श्यामाजी और रूहें ही समझते हैं। इनके अतिरिक्त कोई दूसरा हो तो समझे?

कहे हादी हक इलम से, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान।
पर नफस मजाजी क्या जानहीं, जाके दिल आंख बुध न कान।। ८५ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि कुलजम सरूप की वाणी से सब बातें समझ में आ जाती हैं। पर झूठी इन्द्रियों वाले इसे कैसे जानेंगे? इनके न आंख हैं, न कान हैं, न बुद्धि है, न दिल है।

जो रूह होवे अर्स अजीम की, नूर बिलंद से उतरी।
सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहू परी।। ८६ ।।

जो रूहें परमधाम से उतरी हैं, वही इन इशारतों को समझती हैं। दूसरे और कोई समझ नहीं पाते।

ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सब समझी जाए।
जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए।। ८७ ।।

रसूल साहब ने साफ लिखा है जिससे बात सबकी समझ में आ जाए, परन्तु जिनके सच्चे दिल और बुद्धि नहीं है, वह श्री राजजी महाराज के वायदों को कैसे समझ सकते हैं?

Nijanand App

जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत।
सो हककी हादी बिना, और न कोई समझत।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से स्वयं कहा कि मैं सब बातों को इशारतों में लिखता हूं, इसलिए श्री श्यामाजी महारानी के बिना हक श्री राजजी महाराज की बातों को और कोई नहीं समझता।

हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए।
या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए।। ८९ ।।

श्री राजजी महाराज की लिखी बातों को श्री राजजी समझते हैं या जो लाया है या जिनके वास्ते यह बातें (वाणी) आई हैं, वह समझते हैं। इनके बिना और कोई दूसरा हो तो समझे।

तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर।
क्यों समझे औलाद आदमकी, हक दिल छिपी खबर।। ९० ।।

इसलिए एक हजार नब्बे वर्ष तक अर्थात् सम्वत् १७३५ तक इन बातों को किसी ने नहीं समझा। यह श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें हैं। इनको आदम की औलाद संसार के आदमी कैसे समझ सकते हैं?

निकाह हवासों कही आदमकी, निकाह अबलीस औलाद आदम।
पूजे हवा खाहिस ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम।। ९१ ।।

बाबा आदम की शादी बीबी हौवा से हुई और आदम की औलाद की शादी शैतान अबलीस से हुई। यह आदम की औलाद है इसलिए निराकार के पूजक हैं। बड़े-बड़े बुजुर्ग और सयानों का भी यही हाल है कि वह भी निराकार के पूजक बने हैं।

तो रही छिपी बीच फुरमान के, निकाह अबलीस सोहोबत अकल।
सो क्यों पावें मगज मुसाफ का, कहे मुरदे मजाजी दिल।। ९२ ।।

आदमी की शादी अबलीस शैतान के साथ होने से उनकी अक्ल से कुरान की बातें अलग रहीं। यह मुर्दा (झूठे) दिल कुरान के छिपे रहस्य कैसे समझ सकते हैं?

जिन गेहूं खाया कौल तोड़के, आदम तिन नसल।
सो क्यों पावे रमूजें हककी, जो लिख्या अर्स असल।। ९३ ।।

बाबा आदम ने खुदा के हुकम को नहीं माना और गेहूं को खाया, इसलिए उसकी औलाद (सब आदमी) खुदा का हुकम न मानने वाले हैं। यह गुप्त बातें जो इशारतों में लिखी हैं, को कैसे समझ सकते हैं?

ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल।। ९४ ।।

श्री राजजी महाराज से रसूल साहब रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी के वास्ते कुरान लाए। अब उसी कुरान के छिपे रहस्यों को रूह अल्लाह श्यामा महारानी अपने दूसरे जामा इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के नाम से कुलजम सरूप के द्वारा खोल रहे हैं, इसीलिए अब किसी तरह की भूल नहीं हो सकती।

Nijanand App

खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान।
मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान।। ९५ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने ग्यारहवीं सदी में कुरान के रहस्य खोले और शैतान को मारकर कयामत के निशान जाहिर किए और सबको एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाए।

इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर।
रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर।। ९६ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज, ईसा मसीह श्यामा महारानी और रसूल साहब तीनों मिलकर शैतान को मारेंगे और ज्ञान का सवेरा करेंगे। कल के दिन जो वायदा कयामत का किया था, वह बारहवीं सदी में कुरान की सब छिपी बातों को मोमिनों के बीच खोलकर जाहिर कर दीं।

काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर।। ९७ ।।

कयामत के वायदों को दुनियां वाले झूठा समझते थे। ग्यारहवीं सदी के अन्त में कयामत के निशान जाहिर होने से रसूल साहब की बातें सच्ची हो गईं।

कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल।
पर क्यों बूझें औलाद आदमकी, जिनकी अबलीस नसल।। ९८ ।।

रसूल साहब की बातों में से एक भी इधर-उधर नहीं हुई। पर यह झूठे दिल वाले आदमी कैसे समझें जो अबलीस की औलाद हैं।

सांचे कौल महंमदके, फिरवले सब पर।
जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर।। ९९ ।।

मुहम्मद साहब के सभी वायदे सबके ऊपर समय पर सही निकले। उन्होंने जो कुछ कहा था, सब हुआ, परन्तु काफिर लोग नहीं समझ सके।

दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम।
भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम।। १०० ।।

कुलजम सरूप की वाणी आने से सबको श्री राजजी महाराज के दर्शन हुए। मोमिनों की जागनी हुई और श्री राजजी महाराज के हुकम से ही संसार के लोगों को दोजख और बहिश्त, जैसे लिखा था, वैसे मिली।

कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने।
भूल परे ना किसी कौलकी, रसूलें कह्या तिनमें।। १०१ ।।

रसूल साहब की बहुत बातें पूरी हो गई हैं और बहुत अभी पूरी होनी हैं। रसूल साहब ने कुरान में जो कहा, उसमें किसी बात की भूल नहीं पड़ेगी।

निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब।
दाभ—तूल—अर्ज काफरों, स्याह मुंह करसी तब।। १०२ ।।

कुरान में जो कयामत के निशान लिखे थे, इनके बातूनी भेद खुल गए। वह अब सब जाहिर हो जाएंगे। दाभ-तुल-अर्ज जो जानवर कहे थे, वह यह काफिर ही हैं, जिनको विश्वास न हो उनके मुंह काले होंगे।

Nijanand App

जब खोले मगज मुसाफ के, द्वार हकीकत मारफत।
एही दिन ऊगे होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत।। १०३ ।।

जब कुलजम सरूप की वाणी से कुरान के छिपे रहस्यों को खोल दिया, तो ज्ञान का सूर्य उदय हो गया। अब दुनियां कयामत को देखेगी।

महामत कहे ए मोमिनों, जिन जागी भूलो कोए।
राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए।। १०४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! कुलजम सरूप की वाणी से अब जागकर मत भूलो और इश्क लेकर परमधाम के रास्ते पर चलो जिससे खेल में और परमधाम में मान मिले।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। २१७ ।।

।। प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ।।

।। प्रकरण ।। ५०३ ।। चौपाई ।। १८२२७ ।।

।। छोटा कयामतनामा सम्पूर्ण ।।

Nijanand App